ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 333-334
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास की अवरोधक

डॉ0 अभिषेक लुनायच
सहायक आचार्य– सामाजिक विज्ञान, राजकीय अभियान्त्रिकी महाविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान), भारत

Received- 12.11.2018, Revised- 16.11.2018, Accepted - 20.11.2018 E-mail: abhilunayach27@gmail.com"

सारांश :आर्थिक विकास की प्रक्रिया में किसी तरह की श्रम शक्ति द्वारा उसके यहाँ के भौतिक संसाधनों का उपयोग सन्निहित रहता है, जिससे कि देश की उत्पादन सम्भावना सिद्ध की जा सके। इस बात में सन्देह नहीं है कि किसी भी राष्ट्र के विकास के प्रयत्नों में उस राष्ट्र की श्रम शक्ति का सक्रिय योगदान होता है, किन्तु यह बात भी उतनी ही सत्य है कि तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या उस राष्ट्र की विकास प्रक्रिया की गति को मन्द कर देती है। बढ़ती हुई जनसंख्या आर्थिक संसाधनों के लिए अनेक प्रकार से अनेक रूपों में बाध्क सिद्ध होती है। इस सम्बन्ध में निम्नांकित जानकारी महत्त्वपूर्ण है–

कुंजीभूत शब्द– आर्थिक विकास, श्रम शक्ति, भौतिक संसाधनों, उत्पादन, सक्रिय योगदान, तीव्र गति,जनसंख्या ।

1. जनसंख्या और राष्ट्रीय आय–1950–1951 से 19951980–81 की कीमतों पर राष्ट्रीय आय में 493 प्रतिशत की वृद्धि हुई, किन्तु जनसंख्या की वृद्धि के परिणामस्वरूप प्रति व्यक्ति आय केवल 131 प्रतिशत ही बढ़ पायी । इस समय हमारी राष्ट्रीय आय की चक्रवृद्धि दर 4.0 प्रतिशत, प्रति व्यक्ति की दर 1.88 प्रतिशत है। जनसंख्या की वृद्धि दर में गिरावट आने के साथ आय की वृद्धि दर बढ़ जाएगी, परन्तु जनसंख्या की ऊँची वृद्धि दर प्रति आप को उन्नत करने में बाध्क सिद्ध होती है।

2. जनसंख्या और खाद्य आपूर्ति– माल्थस ने जब से अपना प्रसिद्ध ''ऐसे ऑन पोपुलेशन' रचा तब से विश्व के लोगों का ध्यान जनसंख्या बनाम खाद्य पर केन्द्रित हो गया। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि भारत में प्रति व्यक्ति कषि क्षेत्र क्रमशः कम होता जा रहा है। 1921 से 1991 के बीच प्रति व्यक्ति कृषि क्षेत्र 0। एकड़ से घटकर 0.47 एकड़ रह गया, जिसका अभिप्रायः 44 प्रतिशत की कमी होना है। आगामी दशकों में जीवित शेष दर बढ़ने के कारण प्रति व्यक्ति कृषि भूमि कापफी कम हो जाएगी। इसके परिणामस्वरूप कृषि भूमि–व्यक्ति अनुपात की कमी की पूर्ति के लिए उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना आवश्यक हो जाएगा।

भारत में खाद्यान्नों की शुद्ध उपलब्धियाँ

वर्ष	जनसंख्या (लाख में)	खाद्यान्नों का शुद्ध उत्पादन (लाख टन में)	प्रति व्यक्ति उपलब्धि (ग्राम में)
1956	3973	627	431
1961	4422	757	469
1975	5975	890	409
1990	8330	1440	474
1996	9320	1694	486
1997	9480	1770	509
1998	9709	1600	451
2001	10,270	1962	501

स्त्रोत : भारत सरकार, आर्थिक समीक्षा, 2001–2002

भारत 2002, सूचना एवं प्रसारण मन्त्राालय भारत सरकार 1956 और 1997 के बीच चाहे खाद्यान्नों का शुद्ध उत्पादन 627 लाख टन से बढ़कर 1,770 लाख टन हो गया, इसका अर्थ इसमें 182 प्रतिशत की वृद्धि हुई, किन्तु खाद्यान्नों की प्रति व्यक्ति उपलब्धि 431 ग्राम से बढ़कर 509 ग्राम की हुई। इसका अर्थ इसमें 41 वर्षों में केवल माा 18 प्रतिशत की नाममात्र की वद्धि हई। प्रति व्यक्ति नाममात्र वृद्धि का कारण भारत में बढ़ रही जनसंख्या है। चूंकि अधिक जनसंख्या की वृद्धि गाँवों में हुई, इसके कारण खाद्यान्न उत्पादन में पारिवारिक उपभोग बढ़ जाने से विक्रय अतिरेक कम रहा और आगे भी यह स्थिति आ रही है। अतः इस दृष्टि से परिवार का परिसीमन नितान्त आवश्यक प्रतीत होता है।

3. जनसंख्या और अनुत्पादक उपभोग–मोटे तौर पर भारत की जनता को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–1. उत्पादक उपभोक्ता, एवं 2. अनुत्पादक उपभोक्ता। उत्पादक उपभोक्ता शब्द जनसंख्या के उस भाग के लिए प्रयुक्त होता है जो राष्ट्रीय आय में योगदान करता है। इससे देश की श्रमशक्ति का बोध होता है। अनुत्पादक उपभोक्ता वर्ग में वे सभी व्यक्ति सम्मिलित हैं जो अपने पालन–पोषण के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं अर्थात् बच्चे, बूढ़े और ऐसी स्त्रियाँ जो घरेलू कार्य करती हैं एवं बेकार व्यक्ति आदि। मोटे रूप में बच्चे, बूढ़े और 15 से 55 वर्ष तक के आयुवर्ग के बेरोजगार व्यक्ति अनुत्पादक उपभोक्ता वर्ग में सम्मिलित रहते हैं।

भारत में उत्पादक एवं अनुत्पादक उपभोक्ताओं की संख्या

वर्ष	कुल कार्यकारी जनसंख्या या उत्पादक उपभोक्ता कुल (लाख)	प्रतिशत	कुल अकार्यकारी जनसंख्या या अनुत्पादक उपभोग कुल (लाख)	प्रतिशत
1961	1750	43.0	2560	58.0
1971	1830	34.2	3720	65.8
1981	2200	37.6	4640	62.4
1991	3750	37.8	5290	62.2
2001	4000	39.0	6100	62.0

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

इस प्रकार उत्तरोत्तर जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ अनुत्पादक उपभोक्ताओं की संख्या में वृद्धि होती रहने से उनके पालन–पोषण तथा सेवा सुश्रूषा पर अधिक व्यय करना पड़ता है।

4. जनसंख्या एवं बेरोजगारी लगातार जनसंख्या की वृद्धि होते रहने से समाज में श्रम–शक्ति की भी लगातार वृद्धि होती रही है, जिसके परिणामस्वरूप बेरोजगारी की समस्या और जटिल हो गई है। छठी पंचवर्षीय योजना, 1980–85 में बेरोजगारों को संख्या 207 लाख थी, जो कुल श्रम–शक्ति का 7.74 प्रतिशत थी। आठवीं पंचवर्षीय योजना 1992–97 में अनुमान, लगाया गया था कि 1990 में बेरोजगारों की संख्या 250 लाख थी। 1990–2000 के लिए बेरोजगारी के प्रक्षेपण इस प्रकार थे–

	1990–2000 के लिए बेरोजगारी के प्रक्षेपण	लाख बेरोजगार व्यक्ति
1	1990 के शुरू में	280
2	1990–95 के दौरान एव प्रवेशक	370
3	आठवीं योजना के लिए कुल ;1+2द्ध	650
4	1995–2000 के दौरान श्रमशक्ति के नव प्रवेशक	410
5	नवीं योजना के लिए कुल बेराजगारी 3+4	1,060

इस प्रकार आठवीं योजना में कुल बेरोजगारों की संख्या लगभग 650 लाख एवं नवीं योजना के अन्त में 2002 में बेरोजगारों की संख्या बढ़कर 1,060 लाख के लगभग हो गई ।

इस प्रकार नवीं पंचवर्षीय योजना क्रियान्वित होने पर भी बेरोजगारी समाप्त होना तो दूर उल्टी उत्तरोत्तर बेरोजगारी बढ़ी है। इससे स्पष्ट है कि राष्ट्रीय संसाधनों बड़ा अंश रोजगार के अवसरों का विस्तार करने में व्यय हो रहा है तथा श्रमिक बढ़ती हुई संख्या समस्या बनती जा रही है।

5. जनसंख्या और शिक्षा, चिकित्सा सहायता तथा आवास–बढ़ती जनसंख्या के कारण बालकों की संख्या में वृद्धि हो रही है जिसके परिणामस्वरूप पर अधिक व्यय आवश्यक हो जाता है। इसमें संदेह नहीं कि शिक्षा पर किया गया या मनुष्यों पर किया गया ऐसा व्यय होता है जो अन्ततः श्रमिकों की उत्पादिता में वद्धि करता है किन्त इस बात पर बल देना आवश्यक है कि इस सम्बन्ध में समयान्तर काफी लम्बा होने के कारण विनियोग की प्रति इकाई द्वारा उत्पादन में वृद्धि पर प्रभाव बहुत कम पड़ता है।

वर्ष 1991 में प्रत्येक छात्रा पर जो 5 से 14 वर्ष तक के आयु वर्ग के थे, 144 रुपये वार्षिक व्यय का अनुमान लगाया गया था। इस अनुमान से 5 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के 1,960 लाख व्यक्ति होने के कारण शिक्षा व्यय में 2,822 करोड़ रुपये वार्षिक वृद्धि का अनुमान लगाया गया था। वर्ष 2001 में इसी आयु वर्ग में लगभग 2,600 लाख व्यक्ति होने तथा शिक्षा व्यय में भी भारी वृद्धि होने से यदि औसतन 500 रुपये प्रति व्यक्ति माना जाए, तो 1,30,000 करोड़ वार्षिक वृद्धि का अनुमान है।

6. जनसंख्या वृद्धि और पूँजी निर्माण– प्रति व्यक्ति वास्तविक आय क विद्यमान स्तर को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय आय में भी उसी दर से वृद्धि हो, जिस दर से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। भारत में जनसंख्या वृद्धि की वार्षिक वर्तमान दर 2001 की जनगणना के अनुसार 1.93 प्रतिशत है। प्रति व्यक्ति वास्तविक आय के विद्यमान स्तर को स्थिर रखने के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय आय में 1.93 प्रतिशत वार्षिक दर से वृद्धि हो। इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए पूँजी–विनियोग आवश्यक है। भारतीय अर्थव्यवस्था में पूँजी–उत्पाद अनुपात 4.2 आँका गया है, जिसका अर्थ यह है कि उत्पाद की एक इकाई वृद्धि के लिए 4.2 इकाई पूँजी आवश्यक है। इस प्रकार राष्ट्रीय आय में 1.93 प्रतिशत की दर से वृद्धि के लिए 1.93 ग 4.2 प्रतिशत पूँजी संचय आवश्यक है।

इस प्रकार 8 प्रतिशत से अधिक पूँजी विनियोग करने के बाद जनता का जीवन स्तर उन्नत करने के लिए बहुत कम पूँजी शेष रह जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि विकास का लाभ भारत की गरीब जनता तक नहीं पहुंच पाता। इसके लिए बहुत से कारणों को उत्तरदायी ठहराया जा सकता है, जैसे–भूमि तथा अन्य सम्पत्ति के स्वामित्व का अन्यायपूर्ण ढाँचा, समाज के निर्धन वर्गों के उत्थान के लिए निर्देशित उपायों पर कम बल तथा पिछले वर्षों में भारत के आर्थिक विकास की धीमी गति, परन्तु इन सब कारणों के साथ जनसंख्या की वृद्धि भी एक महत्त्वपूर्ण कारण है।

आवश्यकता इस बात की है कि एक ओर तो अधिक जनसंख्या का निर्वाह करने के लिए देश को अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ानी होगी, और दूसरी ओर प्रजनन कम करना होगा ताकि जनसंख्या वृद्धि दर को कम किया जा सके।

REFERENCES

1. Agarwala, S.N. (1977) : India's population problems, New Delhi.
2. भारत सरकार, आर्थिक समीक्षा, 2011–2002 भारत 2002, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
3. योगेश कुमार शर्मा : पर्यावरण, मानव संसाधन और विकास, पोइन्टर पब्लिशर्स जयपुर, 2004.
4. Bhende, A.A., and Tara Kantikar (1996) ; Principles of population studies, Himalaya publishing House, Bomba

*****